हिन्दी तिमाही पत्रिका

मूल्य 30 रूपये

पतहर

UPHIN/2016/67435

ISSN-2456-0413

दिसम्बर 2020

शंभुनाथ सिंह की कविताएं

नवगीत के प्रतिष्ठापक और प्रगतिशील कवि शंभू नाथ सिंह का जन्म 17 जून 1916 को गाँव रावतपार, जिला देवरिया, उत्तर प्रदेश में हुआ। प्रमुख कृतियाँ – रूप रश्मि,माता भूमिः, छायालोक, उदयाचल, दिवालोक, जहाँ दर्द नीला है, वक्त की मीनार पर (सभी गीत संग्रह) संपादन – नवगीत के तीन दशकों का सम्पादन, नवगीत अर्द्धशती का सम्पादन तथा नवगीत सप्तकों का सम्पादन। निधनः 3 सितम्बर 1991

रोशनी के लिए

यों अँधेरा अभी पी रहा हूँ,
रोशनी के लिए जी रहा हूँ ।
एक अँधे कुएँ में पड़ा हूँ
पाँव पर किन्तु अपने खड़ा हूँ,
कह रहा मन कि कद से कुएँ के
मैं यकीनन बहुत ही बड़ा हूँ ।
मौत के बाहुओं में बँधा भी
जिन्दगी के लिए जी रहा हूँ ।
खौफ की एक दुनिया यहाँ है,
कैद की काँपती–सी हवा है,
सरसराहट भरी सनसनी का
खत्म होता नहीं सिलसिला है ।
साँप और बिच्छुओं से घिरा भी
आदमी के लिए जी रहा हूँ ।
तेज बदबू, सड़न और मैं हूँ,
हर तरफ है घुटन और मैं हूँ ।
हड्डियों, पसलियों, चीथड़ों का
सर्द वातावरण और मैं हूँ ।
यों अकेला नरक भोगता भी
मैं सभी के लिए जी रहा हूँ ।
सिर उठा धूल मैं झाड़ता हूँ
और जाले तने फाड़ता हूँ,
फिर दरारों भरे इस कुएँ में
दर्द की खूँटियाँ गाड़ता हूँ ।
चाँद के झूठ को जानता भी
चाँदनी के लिए जी रहा हूँ ।

मुझको क्या–क्या नहीं मिला

राजा से हाथी घोड़े
रानी से सोने के बाल,
मुझको क्या–क्या नहीं मिला
मन ने सब–कुछ रखा संभाल।
चँदा से हिरनों का रथ
सूरज से रेशमी लगाम,
पूरब से उड़नखटोले
पश्चिम से परियाँ गुमनाम।
रातों से चाँदी की नाव
दिन से मछुए वाला जाल!
बादल से झरती रुन–झुन
बिजली से उड़ते कंगन,
पुरवा से सन्दली महक
पछुवा से देह की छुवन।
सुबहों से जुड़े हुए हाथ
शामों से हिलती रूमाल!
नभ से अनदेखी जंजीर
धरती से कसते बन्धन,
यौवन से गर्म सलाखें
जीवन से अनमाँगा रण।
पुरखों से टूटी तलवार
बरसों से जंग लगी ढाल!
गलियों से मुर्दों की गंध
सड़कों से प्रेत का कुआँ,
घर से दानव का पिंजड़ा
द्वार से मसान का धुआँ!
खिड़की से गूँगे उत्तर
देहरी से चीखते सवाल!
मुझको क्या–क्या नहीं मिला
मन मे सब–कुछ रखा संभाल!

वक्त की मीनार पर

मैं तुम्हारे साथ हूँ
हर मोड़ पर संग–संग मुड़ा हूँ।
तुम जहाँ भी हो वहीं मैं,
जंगलों में या पहाड़ों में,
मंदिरों में, खंडहरों में,
सिन्धु लहरों की पछाड़ों में,
मैं तुम्हारे पाँव से
परछाइयाँ बनकर जुड़ा हूँ।
शाल–वन की छाँव में
चलता हुआ टहनी झुकाता हूँ,
स्वर मिला स्वर में तुम्हारे
पास मृगछौने बुलाता हूँ,
पंख पर बैठा तितलियों के
तुम्हारे संग उड़ा हूँ।
रेत में सूखी नदी की
मैं अजन्ताएँ बनाता हूँ,
द्वार पर बैठा गुफा के
मैं तथागत गीत गाता हूँ,
बोढ के वे क्षण, मुझे लगता
कि मैं खुद से बड़ा हूँ।
इन झरोखों से लुटाता
उम्र का अनमोल सरमाया,
मैं दिनों की सीढ़ियाँ
चढ़ता हुआ ऊपर चला आया,
हाथ पकड़े वक्त की
मीनार पर संग–संग खड़ा हूँ।

उत्खनन

उत्खनन किया है मैंने
गहराई तक अतीत का ।
सिन्धु–सभ्यता से अब तक
मुझको एक ही स्तर मिला,
ईंट–पत्थरों के घर थे
सोने का नहीं घर मिला,
युद्धों के अस्त्र मिले पर
वृत्त नहीं हार–जीत का ।
यज्ञकुण्ड अग्निहोत्र के
मिले नाम गोत्र प्रवर भी
सरस्वती की दिशा मिली
पणियों के ग्राम–नगर भी
कोई अभिलेख पर नहीं
सामगान के प्रगीत का ।
कब्रों में ठठरियाँ मिलीं
टूटे उजड़े भवन मिले,
मिट्टी में ब्याज मिल गए
पर न कहीं मूल–धन मिले,
आदमी मिला कहीं नहीं
जीवित साक्षी व्यतीत का ।
मिट्टी के खिलौने मिले
चित्रित मृतभाण्ड भी मिले ।
सड़कों–चौराहों के बीच
हुए युद्ध–काण्ड भी मिले,
कोई ध्वनि–खण्ड पर नहीं
मिला किसी बातचीत का ।
मन्दिर गोपुर शिखर मिले
देवता सभी मरे मिले
उकरे युगनद्ध युग्म भी
दीवारों पर भरे मिले ।
सहते आए हैं अब तक
जो संकट ताप–शीत का ।

ISSN-2456-0413

हिन्दी तिमाही पत्रिका

पतहर

वर्ष 05 अंक 04
अक्टूबर–दिसम्बर 2020
मूल्य 30 रूपये पेज–60

सम्पादक
विभूति नारायण ओझा

सम्पादक मण्डल
डा0 विक्रम मिश्र
डॉ उन्मेष कुमार सिन्हा
डॉ विजय आनंद मिश्र
डॉ कमलेश कुमार यादव

Email-hindipatahar@gmail.com

Mo-09450740268

http://patahar.blogspot.com/?m=1

आवरण बंशीलाल परमार

पतहर, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक विभूति नारायण ओझा द्वारा ज्योति ऑफसेट प्रेस सलेमपुर देवरिया से मुद्रित एवं कार्यालय ग्राम बहादुरपुर पोस्ट बड़हरा(खुखुन्दू) जिला देवरिया से प्रकाशित। सम्पादक–विभूति नारायण ओझा

प्रकाशित सामग्री से सम्पादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवादास्पद मामले देवरिया न्यायालय के अधीन होगा।

UPHIN/2016/67435

–इस अंक में–

2.अपनी कलम

आवरण आलेख

3.मुझे यह खिड़की खोलनी चाहिए *कौशल किशोर*
5.अपने जैसे मंगलेश का जाना अशोक पाण्डेय
6.भारतीय कविता का स्वाभिमान थे मंगलेश कृपाशंकर चौबे
7.सत्ता और व्यवस्था के विरूद्ध प्रतिरोध की आवाज चंद्रेश्वर
11.मंगलेश डबराल के लिए कुछ कविताएं
12.मंगलेश डबराल की कुछ कविताएं
14. मंगलेश होने के मायने गुरबख्श सिंह मोंगा

कविता

तान्या सिंह –15/सुमित दहिया–16/राजकुमार जैन– 18/
सूर्यनारायण गुप्त–18/अनुज पांडेय– 36/सचिन –38/
मनीष कुमार–38/नेहा शर्मा–43/नीरज कुमार मिश्र–52/अंजुमन आरा–54

कहानी

33.हादसे जितना सच राजेश कदम
37.धनतेरस डॉ सरला सिंह
39.रिश्तों की ठांव अरुण तिवारी

आलेख

17.भारतीय भाषा विश्वविद्यालय अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी
19.विष्णु खरे की कविता मिथिलेश श्रीवास्तव
26.भूका है बंगाल रे साथी, भूका है बंगाल जाहिद खान
29.भारतीय सिनेमा वाया स्त्री विमर्श तेजस पूनिया
42.भारत के धार्मिक उत्सव लोक नृत्य स्मृति शर्मा

व्यंग्य

41.मदन गुप्ता सपाटू
51.व्यग्र पाण्डे

पुस्तक चर्चा

44.अजय चन्द्रवंशी
47.जितेन्द्र कुमार
48. डॉ. नीलोत्पल रमेश

रिपोर्ट

8–10/25/55/56

खाता विवरण
खाता का नाम–पतहर
खाता सं. 98742200010701
आईएफएससी–एसबीआईएनबी0009874
बैंक : सिंडिकेट बैंक खुखुन्दू, देवरिया

महामारी के समय में साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन

भारत समेत पूरी दुनिया में कोरोना महामारी का संकट पसरा हुआ था, जब देश में तालाबंदी थी, ऐसे में संपूर्ण मानव जीवन पूरी तरह प्रभावित हो गया था। इस कठिन समय में साहित्यिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन कर पाना बेहद कठिन काम रहा, फिर भी देश की तमाम पत्रिकाओं ने अपने डिजिटल संस्करण प्रकाशित कर नियमितता को बनाए रखा तथा पाठकों को जोड़ने का काम किया। साहित्यिक पत्रिका पतहर भी वैश्विक संकट के दौर में ऑनलाइन माध्यमों का प्रयोग कर अपने पाठकों शुभचिंतकों से जुड़ने के प्रयास में रही है। बावजूद इसके हमें जैसे ही थोड़ा मौका मिला हमने जनवादी कवि ध्रुव देव मिश्र पाषाण पर अपना अंक केंद्रित करते हुए प्रकाशित किया था, जिसकी काफी सराहना हुई। अब जब धीरे–धीरे जिंदगी पुनः रफ्तार पकड़ रही है तब फिर हम अपने सीमित संसाधनों के साथ एक बार फिर पत्रिका का प्रकाशन करने का साहस कर रहे हैं। इस कठिन समय में साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित करना और पाठकों तक पहुंचाना कितना चुनौतीपूर्ण कार्य है, इसे सिर्फ वही समझ सकता है जो व्यक्ति पत्रकारिता और साहित्य से गहराई तक जुड़ा हुआ है। ऐसे समय में जब लोग अपनी जिंदगी बचाने के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं, तब एक लघु पत्रिका की संपादकीय टीम अपनी साहित्यिक जिम्मेदारी का निर्वहन करने में लगी हुई है ताकि हम अपनी विरासत को बचा सकें। हम अपने पाठकों, शुभचिंतकों के बल पर और अपने पूर्वज महान संपादकों, पत्रकारों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए एक खूबसूरत दुनिया के निर्माण के लिए चल रहे संघर्ष में अपनी क्षमताभर सहयोग करने के लिए व जनता तक बेहतर साहित्य पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसी बीच कोरोना महामारी ने साहित्य के कई महत्वपूर्ण हस्तियों को हमसे छीन लिया। यह हमारे लिए और पूरी साहित्य बिरादरी के लिए अपूरणीय क्षति है। देश के महत्वपूर्ण कवि व साहित्यकार तथा संपादक ललित सुरजन का निधन हो गया तो वहीं हिंदी जगत के जनपक्षधर कवि मंगलेश डबराल भी हम सभी को छोड़ कर चले गए। सरस्वती सम्मान सहित विभिन्न सम्मानों से सम्मानित शम्सुर्रहमान फारुकी भी अब नहीं रहे। उनका गोरखपुर से भी नाता रहा। आकाशवाणी में पूर्व अधिकारी व अब गोरखपुर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर डॉ अरविंद त्रिपाठी कहते हैं कि किताबों से घिरे एक आदमी का अंत हुआ है,वे हमेशा विद्यार्थी रहे। उनकी कृति कई चांद थे सरे आसमां चर्चित रही। उनका निधन भी साहित्य जगत की अपूरणनीय क्षति है। कोरोना महामारी ने साहित्य के इन साधकों को हमसे छीन लिया। पतहर पत्रिका की तरफ से विनम्र श्रद्धांजलि! पतहर पत्रिका का यह अंक प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार रहे स्मृति शेष मंगलेश डबराल पर केंद्रित है। इस अंक में विभिन्न लेखकों ने स्वर्गीय डबराल के साहित्यिक अवदान को अपने नजर से देखने की कोशिश की है। ऐसे समय में जब आम जन की आवाज बडे मीडिया संस्थान नहीं बन पा रहे हैं, तब ऐसे व्यक्तित्व के रचना संसार से आम पाठकों युवाओं को परिचित कराना हमारी जिम्मेदारी बनती है। डबराल जी के साहित्य पर बात करना परिवर्तनकामी चेतना को समृद्ध करना है। उनका अचानक चले जाना हर उस व्यक्ति की क्षति है जिसने व्यापक जनता का पक्ष चुना है। मंगलेश डबराल हिंदी जगत के जन पक्षीय तेवर के वरिष्ठ रचनाकार थे। वे अपनी कविताओं व लेखनी के माध्यम से वर्तमान अमाननीय होती दुनिया की पड़ताल करते रहे तथा मनुष्य और मनुष्यता को बचाए रखने के लिए हमेशा रचते रहे। भारतीय समाज के यथार्थ को उद्घाटित करने वाले डबराल जी का अचानक इस दुनिया से चले जाना बेहद दुखदाई है। उनकी कविताओं में प्रेम, संघर्ष और प्रतिरोध का स्वर देखा जा सकता है। वे समकालीन हिंदी कविता के सबसे चर्चित कवि रहे। 14 मई 1949 को उतराखंड के टिहरी में जन्मे मंगलेश डबराल ने साहित्य व पत्रकारिता के क्षेत्र में बड़ा मुकाम हासिल किया था, पिछले दिनों एम्स में इलाज के दौरान उनका निधन हो गया, वह वर्तमान में एनबीटी से जुड़े थे। उन्होंने हिंदी कविता व पत्रकारिता को जो ऊंचाई दी वह दुर्लभ है। उनके प्रकाशित संग्रहों में मुख्य रूप से पहाड़ पर लालटेन, हम जो देखते हैं,नए युग में शत्रु, घर का रास्ता आदि विशेष चर्चित हैं। हिंदी साहित्य के इस बड़े रचनाकार ने एक खूबसूरत दुनिया का जो स्वप्न अपनी आंखों में देखा था उसे पूरा होना शेष है। उनकी एक कविता का अंश है जो उनके सपनों को बयां करता है–

तुम्हारा प्यार /एक लाल रुमाल है/जिसे मैं झंडे सा फहराना चाहता हूं।

इस अंक में मंगलेश डबराल की स्मृति में सामग्री के साथ विविध आलेख, कविताएं, कहानियां, सिनेमा, पुस्तक समीक्षा व अन्य पठनीय सामग्री भी शामिल है।

पतहर के इस अंक के साथ ही यह वर्ष भी समाप्त हो रहा है। तब यह जरूरी हो जाता है कि पाठक वर्ग पतहर द्वारा किए जा रहे इस प्रयास पर अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएं ताकि पत्रिका का प्रकाशन और बेहतर हो सके। रूप और अंतर्वस्तु के बारे में अपनी राय हम तक पहुंचाएं, हम आत्मालोचना तो करते हैं लेकिन पाठकों की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आने पर अपनी गलतियों का अहसास नहीं हो पाता है। आपकी प्रतिक्रियाएं हमें ताकत प्रदान करती हैं। साथ ही आपकी उपस्थिति का एहसास भी कराती हैं, हमारे पास और कोई पूंजी नहीं है। हमारे पाठक और शुभचिंतक ही हमारी पूंजी हैं। इन्हीं के बल पर हम यह प्रकाशन पिछले कई वर्षों से नियमित कर पाने में सक्षम है। सत्ता–प्रतिष्ठानों व बड़े घरानों से निकलने वाली पत्रिकाओं की तरह हमारे पास अथाह धनबल नहीं है। हम जनसहयोग से पत्रिका निकाल कर जनता व पाठकों तक पहुंचने की लगातार कोशिश कर रहे हैं।सर्व विदित है कि पतहर पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाँव से निकलने वाली साहित्यिक पत्रिका है, इस चुनौतीपूर्ण कार्य को करते हुए हमें अनेक कठिनाइयां हुईं, लेकिन इन कठिनाइयों से जूझते हुए हम अगले वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं।

सभी शुभचिंतकों, पाठकों, रचनाकारों व विज्ञापन सहयोगियों को नववर्ष 2021 की हार्दिक शुभकामनाएं !

(विभूति नारायण ओझा)
संपादक

– मंगलेश डबराल की याद में –

मुझे यह खिड़की खोलनी चाहिए

कौशल किशोर

मंगलेश डबराल का पहला कविता संग्रह है 'पहाड़ पर लालटेन'। इसमें उनकी 40 कविताएं संकलित है। इनका रचनाकाल 70 से 80 तक फैला हुआ है। यह संग्रह उस वक्त आया जब वे लखनऊ से निकलने वाले 'अमृत प्रभात' के साहित्य संपादक थे। आते ही यह संग्रह चर्चित हुआ। उन्हें पहचान मिली। मुझे उनकी कविताओं से गुजरने का मौका मिला। लखनऊ की सांस्कृतिक संस्था नवचेतना की ओर से उनके इस संग्रह पर गोष्ठी रखी गयी। इसमें मंगलेश के इस संग्रह पर मैंने लेख पढ़ा और अनिल सिन्हा ने पंकज सिंह के पहले कविता संग्रह 'आहटें आसपास' पर। इस गोष्ठी में नीलाभ व पंकज सिंह भी शामिल थे। मैंने अपने लेख में मंगलेश की कविताओं की असंगतियों और उनकी कविता की मुख्य ताकत पर अपनी बात रखी। काफी गर्मा–गर्म बहस हुई। आज भी मेरी समझ है कि मंगलेश डबराल के रचनात्मक विकासक्रम को इस संग्रह से समझा जा सकता है। वह लेख 'पहल' में उन्हीं दिनों छपा। उस लेख के कुछ अंश के माध्यम से मंगलेश का याद करता हूं। यह टिप्पणी उनके प्रति मेरी श्रद्धांजलि है। मंगलेश की कविताओं की मुख्य विशेषता है इंद्रियों की सक्रियता। इस सक्रियता की वजह ही इन कविताओं को सघन संवेदनात्मक आधार मिलता है। मंगलेश के यहां मुख्य समस्या सघन संवेदनात्मकता को अपनी वैचारिक शर्तों के साथ सही सामंजस्य बिठाने की है। इनकी कविताओं की रचनात्मक स्थितियां इनकी वैचारिक शर्तों द्वारा निर्मित नहीं होती बल्कि दैनिक जीवन के छोटे–मोटे अनुभव और घटनाक्रमों के बीच ही अपना विषय वस्तु ग्रहण करती है। यही कारण है कि इन कविताओं में पीड़ित वर्गों यानि मजदूरों किसानों से भावनात्मक लगाव और उनके संघर्षों की अभिव्यक्ति का अभाव है साथ ही यहां व्यवस्था की क्रूरता का भयावह रूप भी नहीं है। इसका यह अर्थ नहीं कि इन कविताओं में सतही शांति को स्वीकृति देने की निर्विरोध मन स्थिति है बल्कि इसके विपरीत मंगलेश के जीवनानुभवों के अंतर में निरंतर विकसित होती मानवीय सोच की प्रक्रिया है जो सचेत चिंतन की अपेक्षा उपचेतन संस्कारों

का अधिक परिणाम है और इन कविताओं में मध्यवर्गीय जीवन की ईमानदार अभिव्यक्ति है। मंगलेश की काव्य यात्रा 'इन ढ़लानों पर वसंत/आयेगा हमारी स्मृति में/ठंड में मरी हुई इच्छाओं को फिर से जीवित करता' इस आशावाद से आरंभ होती हुई 'इस खिड़की के बाहर मेरा इंतजार हो रहा है' और 'मुझे यह खिड़की खोलनी चाहिए/जो तमाम खिड़कियों के/खुलने की शुरुआत है' तक पहुंचती है तथा अपने विकास की सकारात्मक संभावना को पैदा करती हुई इस बात का आभास देती है कि आगे की यात्रा किस पथ पर अग्रसर होगी। इसका यह अर्थ नहीं कि 'पहाड़ पर लालटेन' आशावादी से लेकर जनोन्मुख कविताओं का संग्रह है। यह सीधी–सरल न होकर यहां असंगतियां मिलेगी। मंगलेश की कविताएं वर्तमान जीवन का जायजा लेती हैं। कवि जो कुछ महसूस करता है उसी एहसास को व्यक्त करती हैं। इसी कारण इन कविताओं में वर्तमान जीवन को मूर्त करने वाले प्रसंग और चित्र हैं। इनकी विषय वस्तु चित्रमय और रूपमय है जो मंगलेश की निजी कलात्मक विशेषता है। वैसे इन कविताओं में हर जगह उपस्थित 'मैं' के रूप में कवि की मानसिकता की स्पष्ट छाप है। फिर भी यहां जीवन की वास्तविकता को चित्रित करने की कोशिश के द्वारा ये कविताएं पाठक का यथार्थ बोध भी विकसित करती हैं–'जहां उजाला जाले की तरह चिपटता है/और समस्याएं मेरी भूख के आगे/डाल देती हैं मेरा ही शरीर' चुपचापद्ध। 'दोस्तों से मैंने कहा – कुछ भी बचाया नहीं जा सकताध्रात में हम जो सपने देखेंगे/वे भी सुबह यहीं छूट जाएंगे/बाहर एक सड़क होगी कहीं जाती हुई/एक बस होगी हमें वहां ले जाती हुई/एक नौकरी होगी धमकाती काम कराती हुई'। आते जाते इन कविताओं ने 'भूख देखी है जो दिन में तीन बार लगती थी'। इन्हें 'जीभ लपलपाते दिन का' सर से चले जाने का एहसास है। ये 'कंधे पर बैठे दुख' और 'आत्मा पर फफूंद' से परिचित हैं। 'यह अंधेरा/हमें लगातार नाटक की तरह खेलता रहा' इस समझ के साथ कवि महसूस करता है कि 'मैं यहां उगा हूं/जहां सारी ऋतुएं समाप्त हो गई हैं/धूप और समुद्र समाप्त हो गए है'। स्वाभाविक तौर पर इस स्थिति में उसे अपने 'सपनों की जगह जली हुई' जमीन ही मिलेगी। इन कविताओं में औरतों के शोषण–दोहन के चित्र भी हैं। इन चित्रों को समकालीन जीवन की वास्तविकता के परिप्रेक्ष्य में हम देख सकते हैं कि आज आदमी समस्याओं की विराटता के आगे कितना बौना हो गया है। आज भी वह अपनी बुनियादी जरूरतों से एक